*भारत की अंतर्राष्ट्रीय बैंकिंग से संबंधित सांख्यिकी : जून, सितंबर तथा दिसंबर 2012**

यह लेख भारत में बैंकों की आस्तियों और देयताओं की वर्ष 2009 और उसके बाद की तिमाही स्थिति की प्रवृत्तियों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है, विशेष रूप से, जून, सितंबर तथा दिसंबर 2012 में समाप्त हुई तिमाहियों में पाई गई हाल की अभिरचना पर ध्यान केंद्रित किया गया है.[1]. इस प्रयोजन के लिए, बैंक फॉर इंटरनेशनल सेटिलमेंट की रिपोर्टिंग पद्धति के अनुसार[2] संगृहीत अंतर्राष्ट्रीय बैंकिंग सांख्यिकी[3] का उपयोग किया गया है। यह लेख भारत में बैंकों की अंतर्राष्ट्रीय देयताओं से बाह्य ऋण की स्थूल तुलना भी प्रस्तुत करता है। वैश्विक परिप्रेक्ष्य में, यह लेख ब्रिक्स देशों के दावों की एक मोटी तस्वीर प्रस्तुत करता है। इससे संबंधित आंकड़े भारतीय रिजर्व बैंक की वेबसाइट पर 21 जून 2013 को जारी किए गए थे।

मुख्य बातें

- दिसंबर 2012 में, भारत में स्थित बैंकों की अंतर्राष्ट्रीय देयताओं (रुपये में) में 25.5 प्रतिशत की भारी वृद्धि (वर्ष-दर-वर्ष) हुई, जबकि उनकी अंतर्राष्ट्रीय आस्तियों में 1.4 प्रतिशत की कमी आई। यह 2011-12 के वित्तीय वर्ष की स्थिति के विपरीत है। ऐसे बैंकों के भारत में कारोबार में भी दिसंबर 2012 को समाप्त तिमाही में कुछ गिरावट आई।
- संपूर्ण 2012 वर्ष के दौरान विश्व भर में अंतर्राष्ट्रीय बैंकिंग में कमी आई।
- अंतर्राष्ट्रीय देयताओं में वृद्धि मुख्यतः एनआरई जमाराशियों और विदेशी मुद्रा उधारों के कारण हुई तथा अंतर्राष्ट्रीय आस्तियों में कमी नोस्ट्रो शेषों में भारी गिरावट के कारण आयी।
- वर्ष 2012 में अंतर्राष्ट्रीय देयताओं में हुई वृद्धि यूएसए, यूके तथा यूएई के प्रति एक्सपोजर में वृद्धि को प्रतिबिंबित करती है, जबकि अंतर्राष्ट्रीय आस्तियों की गिरावट यूएसए, सिंगापुर, हांगकांग तथा फ्रांस के प्रति प्रतिबिंबित हुई।
- दिसंबर 2012 के अंत में, अंतर्राष्ट्रीय देयताओं में 80.5 प्रतिशत के साथ यूएस डालर प्रमुख घटक था, वहीं अंतर्राष्ट्रीय आस्तियों में 57.0 प्रतिशत के साथ भारतीय रुपया प्रमुख घटक था।
- तत्काल जोखिम आधार पर भारतीय बैंकों के अन्य सभी देशों पर अंतर्राष्ट्रीय दावों में दिसंबर 2012 में 15.0 प्रतिशत की दर से वृद्धि हुई जो पिछले वर्ष की 16.2 प्रतिशत की वृद्धि के मुकाबले कम थी। कुल अंतर्राष्ट्रीय दावों में बैंकिंग क्षेत्र के प्रति एक्सपोजर में पिछले वर्ष की 16.8 प्रतिशत की तुलना में 11.7 प्रतिशत की ही वृद्धि हुई।
- अंतिम जोखिम आधार पर समेकित विदेशी दावों में पिछले वर्ष की 15.4 प्रतिशत की वृद्धि के मुकाबले दिसंबर 2012 के अंत में 11.2 प्रतिशत की वृद्धि हुई

---

* इस विषय पर पूर्व के लेख भारिबैं बुलेटिन के विभिन्न अंकों में प्रकाशित किए गए हैं।

[1] आइबीएस पर दिसंबर 2011 तथा मार्च 2012 के आंकड़ों पर आधारित लेख सितंबर 2012 अंक में प्रकाशित किया गया था, जिसमें आइबीएस के प्रयोजन के लिए संबंधित आंकड़ों की रिपोर्टिंग, आइबीएस के लिए बीआइएस रिपोर्टंग क्षेत्र, एलबीएस / सीबीएस समेकन की विधि, आइबीएस बनाम भारत के बाह्य ऋणों के बीच अंतर/संबंध आदि का सार संलग्नक के रूप में उपलब्ध किया गया है।

[2] आइबीएस में स्थानीय बैंकिंग सांख्यिकी तथा समेकित बैंकिंग सांख्यिकी शामिल है. यह लेख लिखतों/घटकों के प्रकार, करेंसी, प्रतिपक्षी/लेनदेनकर्ता इकाई के देश तथा रिपोर्टकर्ता बैंकों की राष्ट्रीयता के अनुसार आस्तियों और देयताओं पर आधारित स्थानीय बैंकिंग सांख्यिकी का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। समेकित बैंकिंग सांख्यिकी पर आंकड़े अवशिष्ट परिपक्वता तथा ऋणकर्ता के क्षेत्र के अनुसार अंतर्राष्ट्रीय/विदेशी दावे दर्शाने के साथ-साथ तात्कालिक ऋणकर्ता देश द्वारा एक्सपोजरों तथा अंतिम जोखिम वाले देश को दावों के पुनर्आबंटन (अर्थात् जोखिम अंतरण) को भी दर्शाते हैं।

[3] बीआइएस समय-समय पर अपेक्षित विविध वित्तीय आंकड़े एकत्रित करता रहा है। हाल के वित्तीय संकट ने वैश्विक बैंकिंग एक्सपोजर पर व्यापक आंकड़ा-आधार की आवश्यकता को रेखांकित किया। बीआइएस द्वारा समेकित अन्य वित्तीय आंकड़ों के साथ-साथ, यह विश्व भर में अंतर्राष्ट्रीय बैंकिंग एक्सपोजर का चित्र भी प्रस्तुत करता है, जिसमें मध्यस्थ अंतर्राष्ट्रीय प्रवाह में बैंकों की भूमिका, राष्ट्रीय बैंकिग प्रणाली का देश को एक्सपोजर, चलनिधि तथा जोखिम अंतरण, बैंकों द्वारा धारित बाह्य ऋण तथा वित्तीय केंद्रों और अपतटीय बैंकिंग गतिविधियों का महत्व शामिल है।

जो हांगकांग, यूएई तथा कनाडा के प्रति प्रतिबिंबित होती है।

- वर्ष 2012 की दूसरी तिमाही तक भारत की ओर समेकित विदेशी दावों में हुई वृद्धि सभी ब्रिक्स देशों के ऐसे दावों की तुलना में कम रही। लेकिन, 2012 की चौथी तिमाही में स्थिति में तब परिवर्तन हुआ जब भारत में दावों में 10 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जो ब्रिक्स देशों के लिए 6.8 प्रतिशत के मुकाबले अधिक थी।

समस्त बीआइएस देशों में अंतर्राष्ट्रीय आस्तियों और देयताओं में गिरावट आई

1. बीआइएस की स्थानीय बैंकिंग सांख्यिकी के अनुसार दिसंबर 2012 के अंत में, समस्त बीआइएस रिपोर्टिंग देशों में अंतर्राष्ट्रीय आस्तियों और देयताओं दोनों में कमी जारी रही (सारणी 1)। वैश्विक बैंकिंग प्रणाली के अंतर्राष्ट्रीय एक्सपोजर में 2011 की दूसरी छमाही में कम वृद्धि हुई थी, उसके बाद मार्च 2012 से इसमें गिरावट आ रही है, जो उच्च जोखिम सोच की द्योतक है।

भारत में बैंकों की अंतर्राष्ट्रीय देयताओं में तीव्र वृद्धि हुई

सारणी 1 : राष्ट्रीयता के आधार पर सभी रिपोर्टिंग देशों की अंतर्राष्ट्रीय देयताएं और आस्तियां [4]

(बकाया राशि ट्रिलियन अमरीकी डालरों में)

वर्ष-तिमाही	सभी क्षेत्रों में देयताएं		सभी क्षेत्रों पर दावे/आस्तियां	
2009-ति1	32.26	(-17.4)	33.49	(-17.0)
2009-ति2	32.68	(-13.4)	34.16	(-12.7)
2009-ति3	32.98	(-9.0)	34.49	(-8.1)
2009-ति4	32.35	(-4.8)	33.81	(-3.9)
2010-ति1	31.85	(-1.3)	33.39	(-0.3)
2010-ति2	31.03	(-5.0)	32.35	(-5.3)
2010-ति3	33.42	(1.3)	34.84	(1.0)
2010-ति4	32.82	(1.4)	33.98	(0.5)
2011-ति1	34.29	(7.7)	35.36	(5.9)
2011-ति2	34.54	(11.3)	35.68	(10.3)
2011-ति3	34.81	(4.2)	35.79	(2.7)
2011-ति4	33.42	(1.8)	34.20	(0.7)
2012-ति1	34.07	(-0.7)	34.81	(-1.5)
2012-ति2	32.97	(-4.5)	33.44	(-6.3)
2012-ति3	33.41	(-4.0)	33.93	(-5.2)
2012-ति4	32.96	(-1.4)	33.54	(-1.9)

टिप्पणी : 1. सभी रिपोर्टिंग देशों द्वारा बीआइएस को स्थानीय बैंकिंग सांख्यिकी के अंतर्गत रिपोर्ट किए गए आंकड़े

2. लघु कोष्ठकों में दिए गए आंकड़े वार्षिक वृद्धि दर दर्शाते हैं।

2. विद्यमान बाजार स्थितियों को देखते हुए तथा भारतीय बैंकों को अनिवासी जमाराशियां जुटाने के लिए अधिक लोच प्रदान करने के लिए, यह निर्णय लिया गया कि एनआरई तथा

चार्ट 1 : भारत में बैंकों की अंतर्राष्ट्रीय देयताएं और आस्तियां - वार्षिक वृद्धि

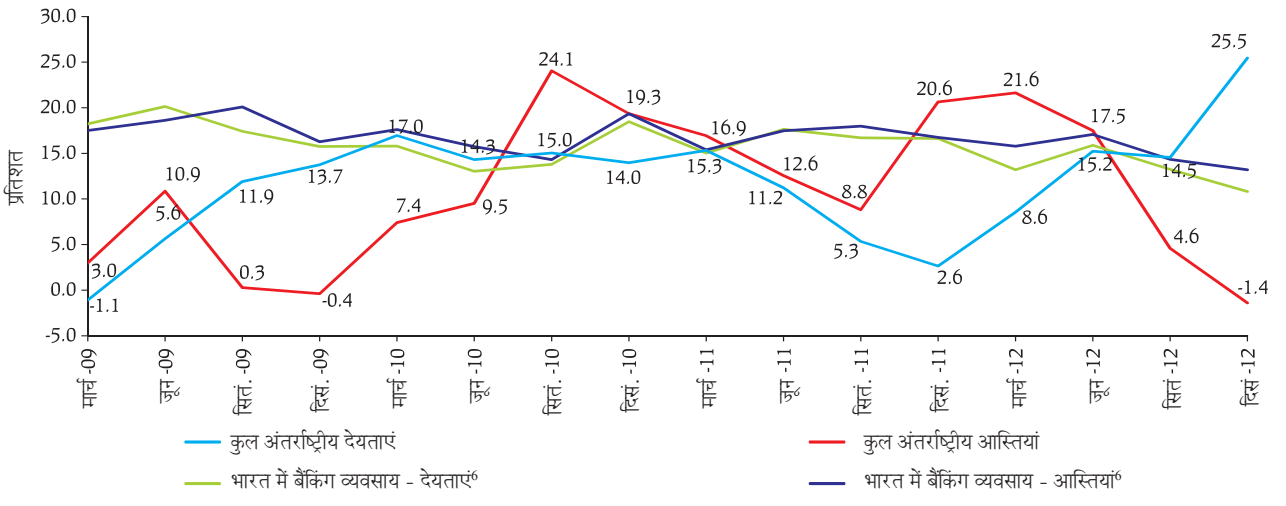

[4] सभी बीआइएस रिपोर्टिंग देशों में बैंकों की कुल अंतर्राष्ट्रीय देयताओं और आस्तियों संबंधी आंकड़े बीआइएस वेबसाइट www.bis.org से ली गई स्थानीय बैंकिंग सांख्यिकी पर आधारित है।

[5] ''अनिवासी भारतीय (बाह्य) रुपया जमाराशि तथा साधारण अनिवासी (एनआरओ) खातों'' पर ब्याज दरों के अविनियमन बैंपविवि, भारिबैं का दिनांक 16 दिसंबर 2011 का परिपत्र तथा ''अनिवासी (बाह्य) रुपया (एनआरई) तथा एफसीएनआर (बी)जमाओं'' पर 23 नवंबर 2011 का परिपत्र

[6] सभी अनुसूचित बैंकों द्वारा हर पखवाड़े में प्रस्तुत किये जाने वाले फार्म 'ए' (धारा 42) के अंतर्गत रिपोर्ट किए गए आंकड़ों पर आधारित। मार्च के आंकड़े अंतिम रिपोर्टिंग शुक्रवार तथा अन्य तिमाहियों के आंकड़े अंतिम शुक्रवार से संबंधित हैं।

चार्ट 2 : अंतर्राष्ट्रीय देयताओं के प्रमुख घटक

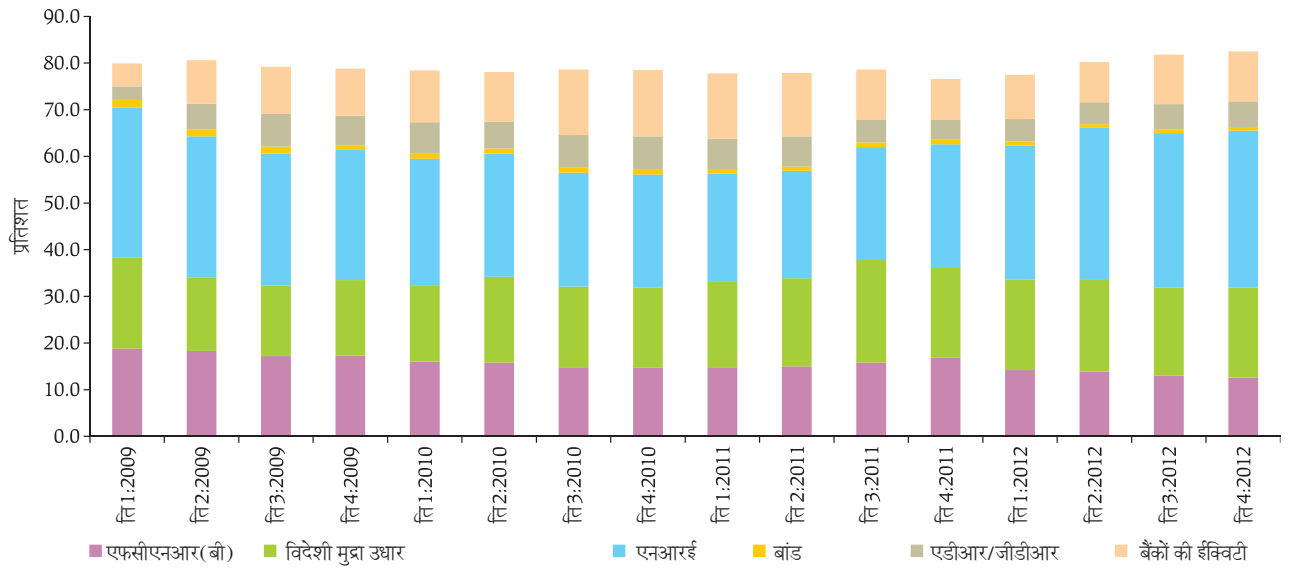

एनआरओ जमाराशियों पर ब्याज दरों को दिसंबर 2011 से अविनियमित किया जाए.[5] इसके परिणामस्वरूप, मार्च 2012 से अंतर्राष्ट्रीय देयताओं (एलबीएस पर आधारित) में तेज वृद्धि हुई। अंतर्राष्ट्रीय देयताओं में दिसंबर 2012 के अंत की स्थिति के अनुसार 25.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई जबकि मार्च 2012 में इसमें 8.6 प्रतिशत की ही वृद्धि हुई थी.

3. भारतीय बैंकिंग प्रणाली की एलबीएस आधारित अंतर्राष्ट्रीय/विदेशी आस्तियों में मार्च 2012 से गिरावट आयी। दिसंबर 2012 के अंत में अंतर्राष्ट्रीय आस्तियों में 1.4 प्रतिशत की गिरावट आई जबकि मार्च 2012 में 21.6 प्रतिशत की वृद्धि दर रही थी (चार्ट 1)। उक्त अवधि में अंतर्राष्ट्रीय एक्सपोजर की गिरावट से ऐसे ऋण की मांग में कमी आ सकती है तथा अंतर्राष्ट्रीय एक्सपोजर के प्रति बैंकों के रुख में सावधानी आ सकती है।

एनआरई जमाओं में वृद्धि हुई, लेकिन एफसीएनआर जमा स्थिर रही

4. दिसंबर 2012 के अंत में, बकाया अनिवासी बाह्य रुपया जमाराशियों में पिछले साल की स्थिति के मुकाबले 50 प्रतिशत की वृद्धि हुई (चार्ट 2)। उक्त अवधि में अंतर्राष्ट्रीय एनआरई देयताओं में एनआरई जमाराशियों का हिस्सा 26.5 प्रतिशत से बढ़ कर 33.6 प्रतिशत पर पहुंच गया।

5. एफसीएनआर जमाराशियों पर 23 नवंबर 2011 से ब्याज दरों में वृद्धि होने के बावजूद पिछले वर्ष के मुकाबले दिसंबर 2012 के अंत में जमाराशियों में वृद्धि नहीं हुई। लेकिन, पिछली तिमाही के मुकाबले जमाराशियां अधिक रहीं।

6. दिसंबर 2012 के अंत में एडीआर/जीडीआर तथा बैंकों की ईक्विटी में निवेशों में भी वृद्धि हुई, जिससे अंतर्राष्ट्रीय देयताओं की समग्र वृद्धि में तेजी आई। इसके परिणामस्वरूप, अन्य अंतर्राष्ट्रीय देयताओं का हिस्सा पिछले वर्ष के 18.7 प्रतिशत से बढ़ कर 22.0 प्रतिशत हो गया।

सारणी 2 : भारत के बाह्य ऋणों का संयोजन

(बिलियन अमरीकी डालर)

घटक	बकाया राशि (निम्नलिखित के अंत मे)							
	मार्च - 2011	जून - 2011	सितंबर - 2011	दिसंबर - 2011	मार्च - 2012	जून - 2012	सितंबर - 2012	दिसंबर - 2012
दीर्घावधि ऋण	241.14	248.42	252.40	256.90	267.31	268.61	280.88	284.41
	(78.8)	(78.4)	(77.9)	(76.7)	(77.4)	(77.0)	(76.8)	(75.6)
जिसमें से								
बाह्य वाणिज्यिक उधार	88.75	93.35	96.78	100.09	104.84	104.29	108.82	112.97
	(29.0)	(29.5)	(29.9)	(29.9)	(30.3)	(29.9)	(29.8)	(30.0)
अनिवासी भारतीय जमाराशि	51.68	52.90	52.50	52.50	58.61	60.87	67.02	67.59
	(16.9)	(16.7)	(16.2)	(15.7)	(17.0)	(17.4)	(18.3)	(18.0)
अल्पकालीन ऋण	64.99	68.47	71.53	78.05	78.18	80.45	84.66	91.88
	(21.2)	(21.6)	(22.1)	(23.3)	(22.6)	(23.0)	(23.2)	(24.4)
कुल बाह्य ऋण	**306.13**	**316.90**	**323.93**	**334.95**	**345.48**	**349.06**	**365.55**	**376.29**
	(100.0)	**(100.0)**	**(100.0)**	**(100.0)**	**(100.0)**	**(100.0)**	**(100.0)**	**(100.0)**

स्रोत : वित्त मंत्रालय, आर्थिक कार्य विभाग, बाह्य ऋण प्रबंधन इकाई (www.finmin.nic.in)
टिप्पणी : लघु कोष्ठकों में दिये गये आंकड़े कुल बाह्य ऋण से प्रतिशत दर्शाते हैं

दीर्घावधि ऋणों में मुख्यत: एनआरआइ जमाराशियों तथा वाणिज्यिक उधारों की वजह से वृद्धि हुई

7. वर्ष 2012 की पहली तिमाही से एनआरई जमाराशियों में हुई तेज वृद्धि से भारत के दीर्घावधि बाह्य ऋणों में वृद्धि हुई (सारणी 2)।

8. बाह्य ऋणों में वृद्धि का अन्य घटक बाह्य वाणिज्यिक उधार हैं जिनमें बैंकिंग क्षेत्र द्वारा लिये गए विदेशी मुद्रा उधार शामिल हैं। बैंकिंग क्षेत्र द्वारा कुल विदेशी मुद्रा उधारों में दिसंबर 2012 के अंत में 25.9 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जबकि पिछली तिमाही में 1.8 प्रतिशत की गिरावट आई थी।

नोस्ट्रो जमा शेषों में गिरावट

9. नोस्ट्रो जमाशेष में दिसंबर 2012 के अंत में पिछले दिसंबर के मुकाबले 23.1 प्रतिशत की भारी गिरावट होने से, अनिवासियों को ऋणों में तथा बकाया निर्यात बिलों में लगभग 8.0 प्रतिशत की वृद्धि होने के बावजूद अंतर्राष्ट्रीय आस्तियों में कमी आई (चार्ट 3)।

10. उक्त अवधि में अंतर्राष्ट्रीय 'आस्तियों के सबसे बड़े घटक निवासियों को विदेशी मुद्रा ऋण' में 2.0 प्रतिशत की कम वृद्धि हुई।

11. नोस्ट्रो जमाशेष में दिसंबर 2012 की पहली तिमाही के अंत में पिछली तिमाही के मुकाबले हुई भारी वृद्धि के परिणामस्वरूप अंतर्राष्ट्रीय आस्तियों में इसके हिस्से में 24.7 प्रतिशत की उच्च वृद्धि हुई, लेकिन 2012 की चौथी तिमाही के अंत में यह घट कर 17.3 प्रतिशत रह गई। तदनुसार 2012 की पहली तिमाही में निवासियों को विदेशी मुद्रा ऋण वाला सबसे बड़ा घटक कम होकर 47.2 प्रतिशत रह गया, उसके बाद यह बढ़ कर 51.2 प्रतिशत हो गया।

अंतर्राष्ट्रीय आस्तियों के करेंसी संयोजन में कोई परिवर्तन नहीं हुआ, जबकि अंतर्राष्ट्रीय देयताओं में भारतीय रुपये का हिस्सा सीमांत रूप से बढ़ा

12. अंतर्राष्ट्रीय आस्तियों के करेंसी संयोजन में जून 2012 से लगभग कोई परिवर्तन नहीं हुआ (चार्ट 5)। यूएस डालर सबसे बड़ा घटक रहा जिसका दिसंबर 2012 के अंत में हिस्सा 80.5 प्रतिशत था।

13. मार्च 2012 के अंत से एनआरई जमाराशियों में लगातार पर्याप्त वृद्धि हुई। अंतर्राष्ट्रीय देयताओं में भारतीय रुपये का जो हिस्सा एक वर्ष पहले 52.5 प्रतिशत था, वह दिसंबर 2012 के अंत में बढ़ कर 57.0 प्रतिशत हो गया (चार्ट 4)।

गैर-बैंक क्षेत्र के प्रति अंतर्राष्ट्रीय देयताओं में उच्च वृद्धि हुई

14. मार्च 2012 से अनिवासी जमाराशियों में हो रही वृद्धि के कारण गैर-बैंक क्षेत्र के प्रति एक्सपोजर में दिसंबर 2012

चार्ट 3 : अंतर्राष्ट्रीय आस्तियों के प्रमुख घटक

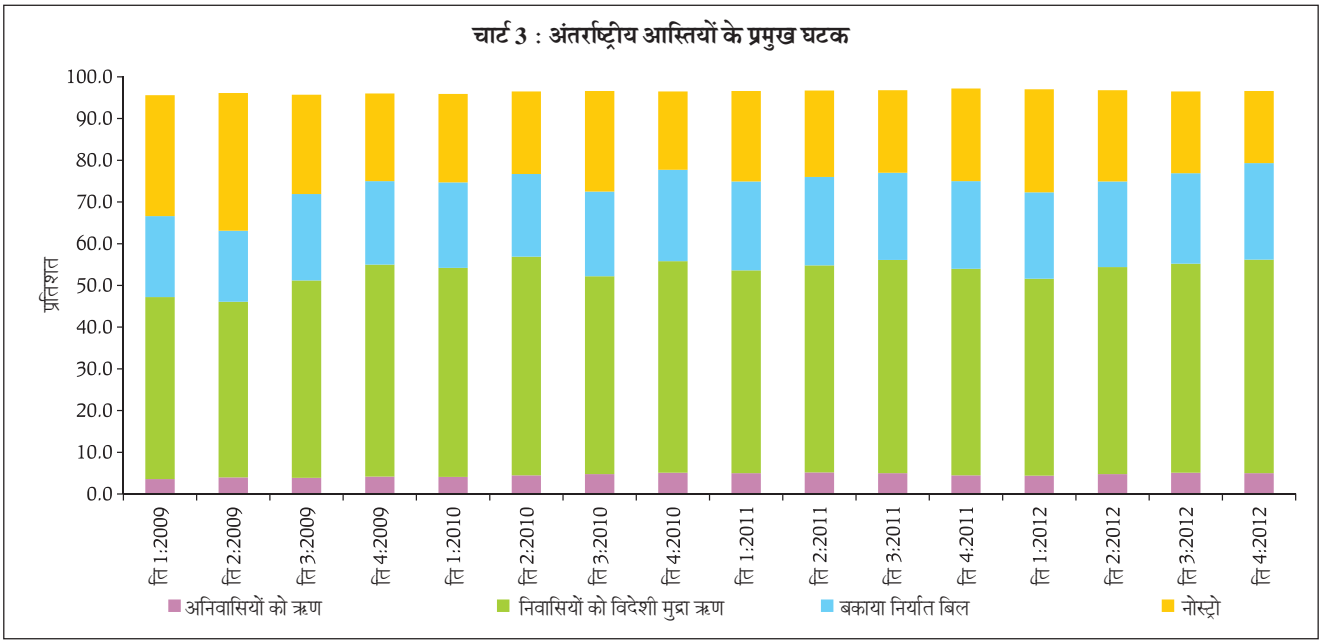

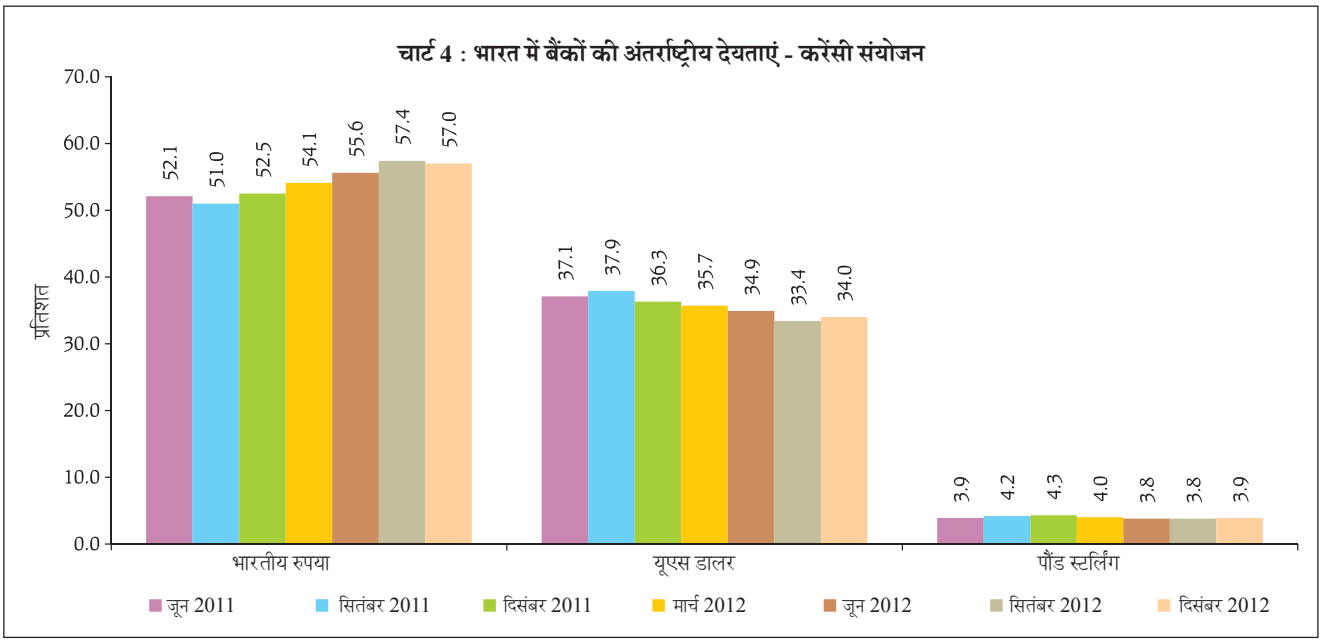

के अंत में 26.6 प्रतिशत की वृद्धि हुई. लेकिन, अंतर्राष्ट्रीय देयताओं में गैर-बैंक क्षेत्र का हिस्सा दिसंबर 2011 से लगभग 74.0 प्रतिशत बना रहा.

15. दिसंबर 2012 के अंत में, गैर-बैंक क्षेत्र के प्रति अंतर्राष्ट्रीय आस्तियों में 5.2 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जबकि कुल अंतर्राष्ट्रीय आस्तियों में इसके हिस्से में 1.4 प्रतिशत की गिरावट आई। इसके परिणामस्वरूप, अंतर्राष्ट्रीय आस्तियों में गैर-बैंक क्षेत्र का हिस्सा एक वर्ष पूर्व के 65.1 प्रतिशत से बढ़ कर 69.5 प्रतिशत पर पहुंच गया।

यूएई के प्रति अंतर्राष्ट्रीय देयताओं के हिस्से में वृद्धि हुई

16. अंतर्राष्ट्रीय देयताओं में समग्र वृद्धि 2012 की अवधि के देशवार अंतर्राष्ट्रीय एक्सपोजरों में प्रतिबिंबित हुई। दिसंबर 2012 के अंत में, जर्मनी को छोड़कर लगभग सभी देशों के प्रति एक्सपोजर में दिसंबर 2011 के स्तर से वृद्धि हुई। यूएई के प्रति एक्सपोजर में दिसंबर 2011 के अंत के 7.3 प्रतिशत की तुलना में 11.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई (चार्ट 6)। एनआरई जमाराशियों में उच्चतर वृद्धि के कारण उक्त अवधि के दौरान

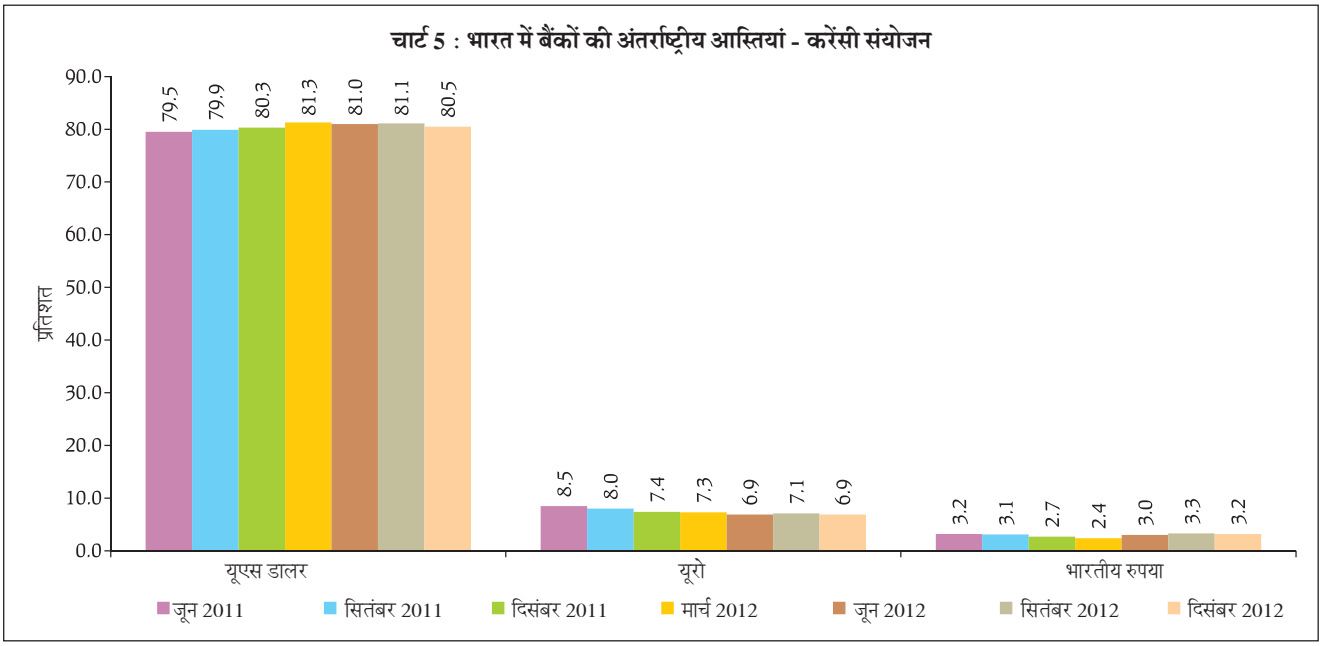

चार्ट 6 : लेनदेन करने वाली इकाई के निवास के देश के अनुसार भारत में बैंकों की अंतर्राष्ट्रीय देयताएं

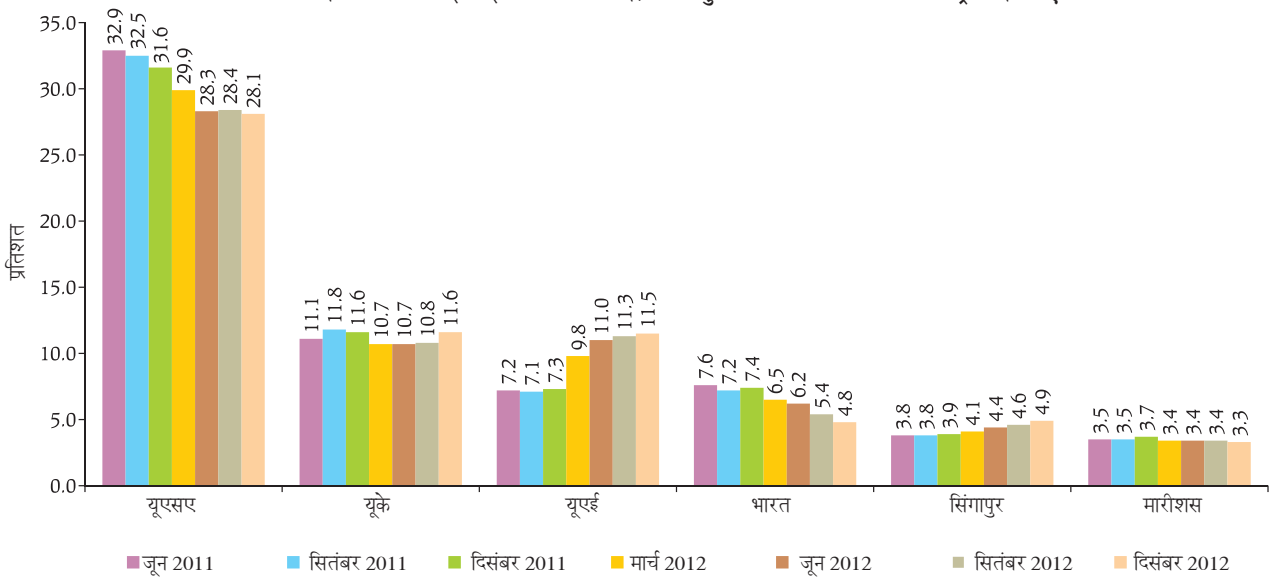

यह यूएसए के प्रति 31.6 प्रतिशत के मुकाबले घट कर 28.1 प्रतिशत रह गया।

सभी देशों में संवितरित समग्र नोस्ट्रो शेष में गिरावट आई

17. दिसंबर 2012 के अंत में, अंतर्राष्ट्रीय आस्तियों में समग्र गिरावट यूएसए, सिंगापुर, हांगकांग, जर्मनी और फ्रांस के प्रति एक्सपोजरों में प्रतिबिंबित हुई (चार्ट 7)। इन देशों के प्रति एक्सपोजरों में गिरावट उक्त देशों में बैंकिंग क्षेत्र के पास नोस्ट्रो शेषों में गिरावट के कारण हुई।

18. उक्त अवधि में यूके तथा यूएई के प्रति एक्सपोजर में वृद्धि हुई, जबकि यूके के बैंकिंग क्षेत्र के पास धारित नोस्ट्रो शेषों में गिरावट आई। यूएई के प्रति एक्सपोजर में वृद्धि बकाया निर्यात बिलों के कारण हुई।

तत्काल जोखिम आधार पर अंतर्राष्ट्रीय दावों में यूएई का हिस्सा बढ़ा

19. तत्काल जोखिम आधार पर, सभी अन्य देशों की समेकित बैंकिंग सांख्यिकी पर आधारित भारतीय बैंकों के अंतर्राष्ट्रीय

चार्ट 7 : लेनदेन करने वाली इकाई के निवास के देश के अनुसार भारत में बैंकों की अंतर्राष्ट्रीय आस्तियां

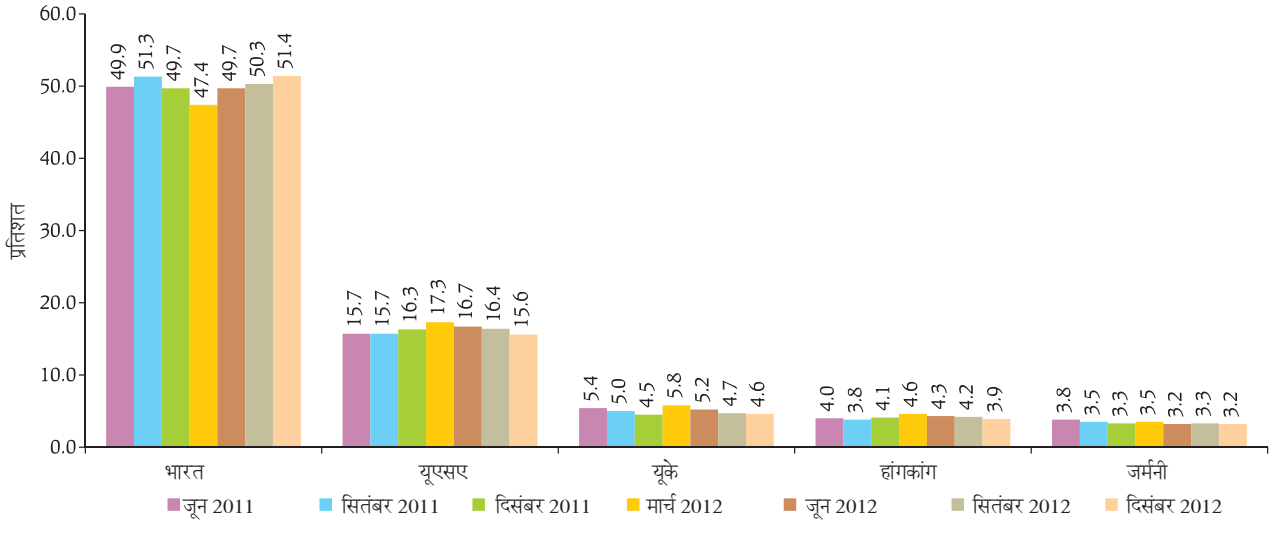

बॉक्स : ब्रिक्स देशों पर विदेशी दावे - दिसंबर 2012 में भारत की स्थिति

वर्ष 2012 में देखी गई प्रवृत्ति जारी रहते हुए, बीआइएस को रिपोर्ट किए गए आंकड़ों के आधार पर, सभी देशों के प्रति समेकित विदेशी दावों में दिसंबर 2012 तिमाही में 1.0 प्रतिशत की सीमांत वृद्धि हुई। लेकिन, ब्रिक्स देशों (ब्राजील, रूस, भारत, चीन, तथा द.अफ्रीका) में कम वृद्धि हुई, सिर्फ जून 2012 की तिमाही को छोड़ कर जब दावों में 0.4 प्रतिशत की कमी हुई थी। वर्ष 2010 की तीसरी तिमाही से सभी ब्रिक्स देशों के भारत के प्रति दावों में वृद्धि हुई जो 2012 की दूसरी तिमाही तक जारी रही। लेकिन, 2012 की चौथी तिमाही में स्थिति में परिवर्तन आया जब भारत पर दावे 10 प्रतिशत बढ़े जो ब्रिक्स

चार्ट ए :सभी देशों, ब्रिक्स देशों तथा भारत के प्रति विदेशी दावे - वृद्धि

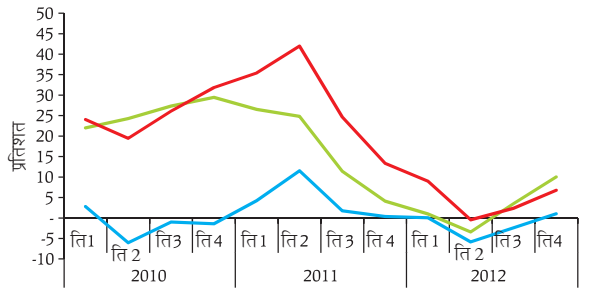

देशों के लिए 6.8 प्रतिशत से अधिक थे (चार्ट ए)।

दिसंबर 2012 में भारत के प्रति विदेशी दावों के 1.1 प्रतिशत हिस्से से ब्रिक्स देशों में चीन और ब्राजील के बाद भारत का तीसरा नंबर था।

मार्च 2009 तिमाही में बैंकिंग और गैर-बैंक निजी क्षेत्र के प्रति सभी देशों के अंतर्राष्ट्रीय दावों में लगभग 44.0 प्रतिशत का समान हिस्सा था। लेकिन, दिसंबर 2012 के अंत में, बैंकिंग क्षेत्र पर दावों का हिस्सा घट कर 38.5 प्रतिशत तथा गैर-बैंक निजी क्षेत्र का हिस्सा बढ़ कर 46.3 प्रतिशत हो गया (चार्ट बी)।

चार्ट बी : सभी देशों पर अंतर्राष्ट्रीय दावों का क्षेत्रवार संयोजन

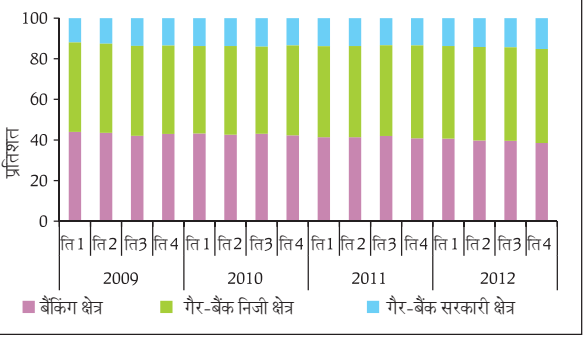

इसके विपरीत, बैंकिंग क्षेत्र के प्रति ब्रिक्स देशों का अंतर्राष्ट्रीय दावों में हिस्सा मार्च 2009 की तिमाही के 56.0 प्रतिशत से बढ़ कर दिसंबर 2012 के अंत में 65.0 प्रतिशत पर पहुंच गया (चार्ट सी)।

भारत के बैंकिंग क्षेत्र पर अंतर्राष्ट्रीय दावे 34.4 प्रतिशत से

चार्ट सी : ब्रिक्स देशों पर अंतर्राष्ट्रीय दावों का क्षेत्रवार संयोजन

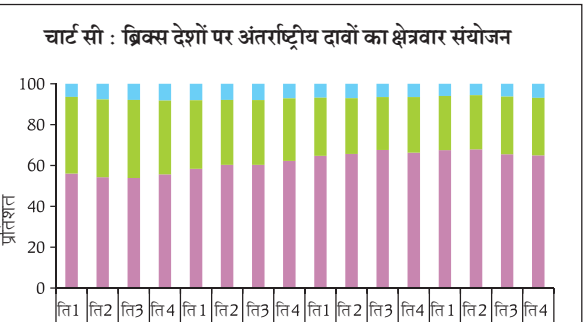

बढ़ कर दिसंबर 2012 के अंत में 37.2 प्रतिशत हो गए. यह हिस्सा 2009-12 की अवधि में बैंकिंग क्षेत्र के प्रति ब्रिक्स देशों के एक्सपोजर की तुलना में कम रहा है।

दावों में पिछले वर्ष के 16.2 प्रतिशत के मुकाबले दिसंबर 2012 के अंत में 15.0 प्रतिशत की कम दर से वृद्धि हुई।

20. दिसंबर 2012 के अंत में, कुल अंतर्राष्ट्रीय दावों में वृद्धि की तुलना में बैंकिंग क्षेत्र पर अंतर्राष्ट्रीय दावों की वृद्धि दर कम अर्थात् 11.7 प्रतिशत रही, जबकि यह गैर-बैंकिंग निजी क्षेत्र के मामले में अधिक अर्थात् 16.8 प्रतिशत रही।

21. दिसंबर 2012 के अंत में, यूएसए तथा यूके के प्रति अंतर्राष्ट्रीय दावों का हिस्से में कमी आई (चार्ट 8)। वर्ष 2012 के दौरान, यूएई के प्रति दावों में पर्याप्त वृद्धि हुई और इसका हिस्सा 2011 की सभी तिमाहियों के लगभग 6.5 प्रतिशत से बढ़ कर दिसंबर 2012 में 8.3 प्रतिशत हो गया।

22. तत्काल देश जोखिम आधार पर भारत पर बीआइएस रिपोर्टिंग देशों के विदेशी दावे दिसंबर 2011 के 4.2 प्रतिशत

चार्ट 8 : तत्काल देश जोखिम आधार पर भारत को छोड़कर बैंकों के समेकित अंतर्राष्ट्रीय दावे

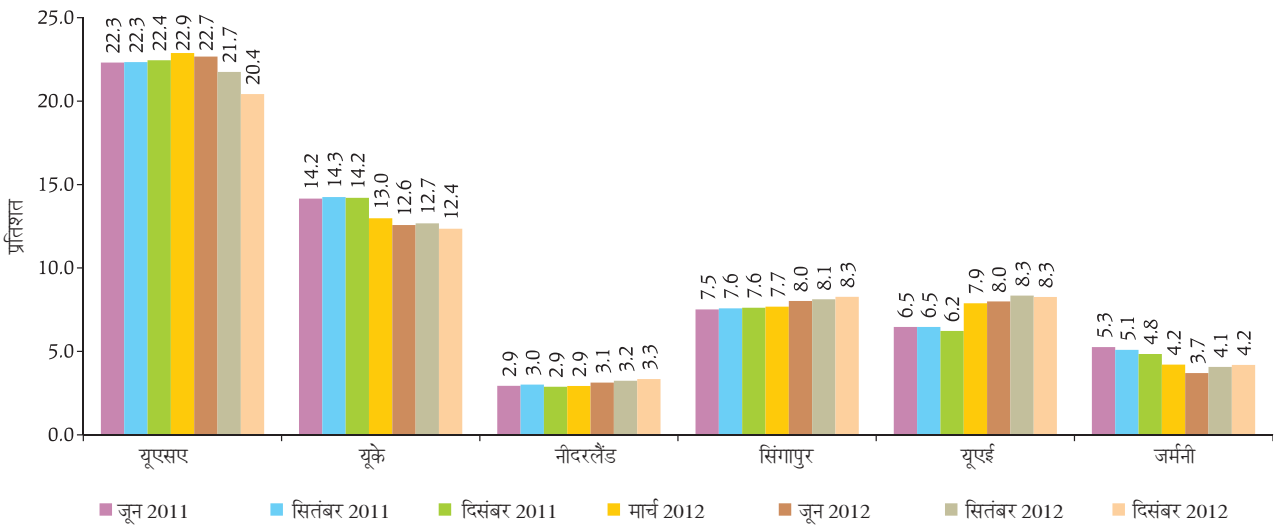

के मुकाबले दिसंबर 2012 में 10.0 प्रतिशत की उच्चतर दर से बढ़े।

चयनित देशों के लिए अंतिम जोखिम आधार पर उच्चतर समेकित विदेशी दावे

23. अंतिम जोखिम आधार पर उच्चतर समेकित विदेशी दावे एक वर्ष पहले के 15.4 प्रतिशत के मुकाबले दिसंबर 2012 के अंत में 11.2 प्रतिशत बढ़े। हांगकांग, यूएई और कनाडा के प्रति विदेशी दावों में पिछले वर्ष वृद्धि हुई और उस के अनुरूप इन देशों के प्रति हिस्सों में भी वृद्धि हुई। यूएसए के प्रति विदेशी दावों में सीमांत वृद्धि हुई, पर इसके हिस्से में गिरावट आई।

24. दिसंबर 2012 के अंत में, व्युत्पन्नों से उत्पन्न होने वाले अंतिम जोखिम आधारित आकस्मिक दावों में एक वर्ष पहले के 8.0 प्रतिशत के मुकाबले 18.7 प्रतिशत की उच्च दर से वृद्धि हुई।

25. गारंटियों और ऋण प्रतिबद्धताओं से उत्पन्न आकस्मिक दावों में भी पिछले वर्ष की अपेक्षा उच्चतर दर से वृद्धि हुई।